बीमारी और कीट नियंत्रण:

- 0.05% क्विनॉल्फॉस का छिड़काव वर्षा ऋतु के दौरान एफिड्स के हमलों को प्रभावी रूप से नियंत्रित करता है।

फसल प्रबंधन

फसल पकना और कटाई:

- हालांकि, 18 महीने के बाद ही फसल अपने चरम पर होती है, भले ही ताजी जड़ों की उपज घटकर 250 किलो / हेक्टेयर रह जाती है।
- जड़ों को इकठ्ठा करने के लिए जमीन खोद कर कटाई की जाती है। फिर इन जड़ों को अच्छी तरह धोया जाता है।

फसल पश्चात प्रबंधन:

- जड़ों को 10 सेमी लंबाई के टुकड़ों में काटा, छाया में सुखाया और जूट के बोरे में भंडारण किया जाता है।

पैदावार :

- सूखी जड़ों की उपज 10 से 15 टन प्रति हेक्टेयर तक होती है।
- एक वर्ष के बाद 400–500 किलो / हेक्टेयर (ताजा जड़ें) प्राप्त की जा सकती हैं।

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय
भारत सरकार
तृतीय तल, आयुष भवन, बी ब्लॉक, जी.पी.ओ. काम्पलेक्स,
आई.एन.ए., नई दिल्ली – 110023
दूरभाष: 011-24651825 | फैक्स : 011-24651827
ईमेल : info-nmpb@nic.in | वैबसाईट : www.nmpb.nic.in

नोट – कृषि प्राद्योगिकी का विकास सुगंधित एवं औषधीय पादप अनुसंधान केंद्र, केरल कृषि विश्वविद्यालय, ओडक्कली, असमन्नूर पोस्ट, एर्नाकुलम जिला, केरल द्वारा किया गया है।

दूधी बेल की खेती

सामान्य नाम	:	दूधी बेल, चिरवेल
वानस्पतिक नाम	:	होलोस्टेमा एडा–कोडियन
कुल	:	एक्लेपियाडेसी
उपयोगी भाग	:	जड़
सामान्य प्रयोग	:	इसकी जड़ें नेत्र विकार, खांसी, पेट दर्द, कब्ज, ज्वर इत्यादि में लाभदायक होती हैं।

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय
भारत सरकार

दूधी बेल

होलोस्टेमा एडा–कोडियन
कुल–एक्लेपियाडेसी

दूधी बेल एक विशाल जंगली आरोही पौधा है। इसमें दूधिया सफेद तरल पदार्थ रहता है।

जलवायु और मिट्टी:

- यह पौधा उष्णकटिबंधीय आर्द्र जलवायु और आंशिक रूप से सूर्य की रोशनी पसंद करता है।
- बलुई–चिकनी मिट्टी इसकी खेती के लिए सर्वोत्तम है।

उगाने की सामग्री:

- इसे बीजों से उगाया जाता है।
- परिपक्व बीज दिसंबर–जनवरी के दौरान एकत्रित किए जाते हैं।
- जड़ और तने की कटाई के माध्यम से भी फसल उगाई जा सकती है।

नर्सरी की विधि

पौध तैयार करना:

- फरवरी में छोटी क्यारियों में आंशिक तौर पर छायादार नर्सरी में बीज बोये जाते हैं।
- हल्की सिंचाई द्वारा क्यारियों में उपयुक्त नमी बनाई जाती है।
- बीजों को बोने से पहले चार से पांच घंटों तक पानी में भिगोया जाता है, बीज करीब 10 दिनों में अंकुरित होते हैं।
- लगभग एक महीने के पौधे 14 सेमी x 10 सेमी के पॉलीबैगों में रोपे जाते हैं, जिनमें मिट्टी, बालू और अच्छी तरह कंपोस्ट की गई खाद 1:1:1 के अनुपात में भरी जाती हैं। पॉलीबैग छाया में रखे जाने और नियमित रूप से सींचे जाने चाहिए।
- एक हेक्टेयर भूमि में पौधे उगाने के लिए लगभग 1.5 किलो बीजों की जरूरत होती है।

रोपण की दर:

- 60 सेमी x 60 सेमी की दूरी पर रोपण के लिए प्रति हेक्टेयर लगभग 28,000 से 30,000 पौधों की जरूरत होगी।

खेत में रोपाई:

- खेत में रोपाई के लिए पौधे मई–जून में तैयार होते हैं।

जमीन की तैयारी:

- जमीन को जुताई और निराई द्वारा तैयार किया जाता है।
- 60 सेमी x 60 सेमी की दूरी पर 30 सेमी x 30 सेमी गहराई के गड्ढे खोदे जाते हैं, और उन्हें प्रत्येक पौधे के लिए 2 किलो की दर से उर्वरक के साथ 1:1 के अनुपात में मिट्टी और बालू को अच्छी तरह मिलाकर भरा जाता है।
- पौधों को सावधानीपूर्वक पॉलीबैग से निकालकर रोपा जाता है।
- अन्य फसल के साथ उगाने की स्थिति में भूमि तैयार करते समय 30 टन/हेक्टेयर की दर से उर्वरक डाला जाता है।

पौधारोपण की दूरी:

- पौधों को खेत में मानसून आरंभ होते ही मई–जून में, पॉलीबैग में लगाए जाने के लगभग 30–45 दिनों के बाद, रोपा जाता है।
- एकल फसल के लिए 60 सेमी x 60 सेमी की दूरी रखी जाती है।
- इसमें प्रति हेक्टेयर लगभग 28,000 पौधों की जरूरत होती है।
- अन्य फसलों के साथ खेती किए जाने पर, पौधों की जरूरत लगभग 14,000 होगी।

संवर्धन विधियां:

- पौधों को जुलाई–अगस्त में सहारे की जरूरत होती है।
- पहली निराई भी जुलाई–अगस्त में की जानी चाहिए।
- फसल को खरपतवार से मुक्त रखने के लिए पौधारोपण के दो और चार महीने में दो बार हाथ से निराई करना आवश्यक है।

सिंचाई:

- दूधी बेल मानसून अवधि के दौरान वर्षा वाली फसल के तौर पर उगाई जाती है।
- मानसून की समाप्ति के बाद वैकल्पिक दिनों में 5 सेमी पानी के साथ इसकी सिंचाई की जाती है।